शैक्षिक तकनीकि ⇒

वर्तमान युग सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का युग है वैज्ञानिक विकास की प्रक्रिया ने मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है आज मानव वैज्ञानिक ज्ञान के प्रयोग के फलस्वरूप अपने जीवन में अधिक सुविधा सम्पन्न उपयोगी बना रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में वैज्ञानिक विकास के फल स्वरूप अनेक क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए तकनीकि के बढते अनुप्रयोग ने शिक्षा की प्रक्रिया के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है।

शैक्षिक तकनीकि से आशय वैज्ञानिक ज्ञान एवं तकनीकि का शिक्षा की प्रत्येक प्रक्रिया में अनुप्रयोग से है। शैक्षिक तकनीकि को परिभाषित करने के लिए कुछ विद्वानो द्वारा दी गयी परिभाषाएं निम्नलिखित है।

⇒ जी० ओ० लीथ के अनुसार ⇒ "शैक्षिक तकनीकि अधिगम तथा अधिगम की दशाओं वैज्ञानिक ज्ञान का प्रयोग है। जिसके द्वारा शिक्षण तथा प्रशिक्षण की कुशलता एवं प्रभावकारिता को उत्तम बनाया जाता है।"

शिव के मित्रा ⇒ "शैक्षिक तकनीकि को उन पद्धतियों तथा प्रविधियों ~~का~~ तथा

Page No.
Date : / /

प्रविधियों का विज्ञान माना जा सकता है जिसके द्वारा शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सकता है।"

एस० एस० कुलकर्णी → "तकनीकी व विज्ञान के आविष्कारों तथा नियमों का शिक्षा की प्रक्रिया में प्रयोग ही शैक्षिक तकनीकि कहा जा सकता है।"

रोबर्ट ए० कॉक्स ⇒ " मनुष्य की सीखने की दशाओं में वैज्ञानिक प्रक्रिया के प्रयोग को शैक्षिक तकनीकि कहा जाता है"

शैक्षिक तकनीकि के क्षेत्र →

शैक्षिक तकनीकि के क्षेत्र को समझने के लिए कुल क्षेत्र (1980) के द्वारा बताये गये तथ्यों के संदर्भ में निम्न लिखित रेखाचित्र द्रष्टव्य है।

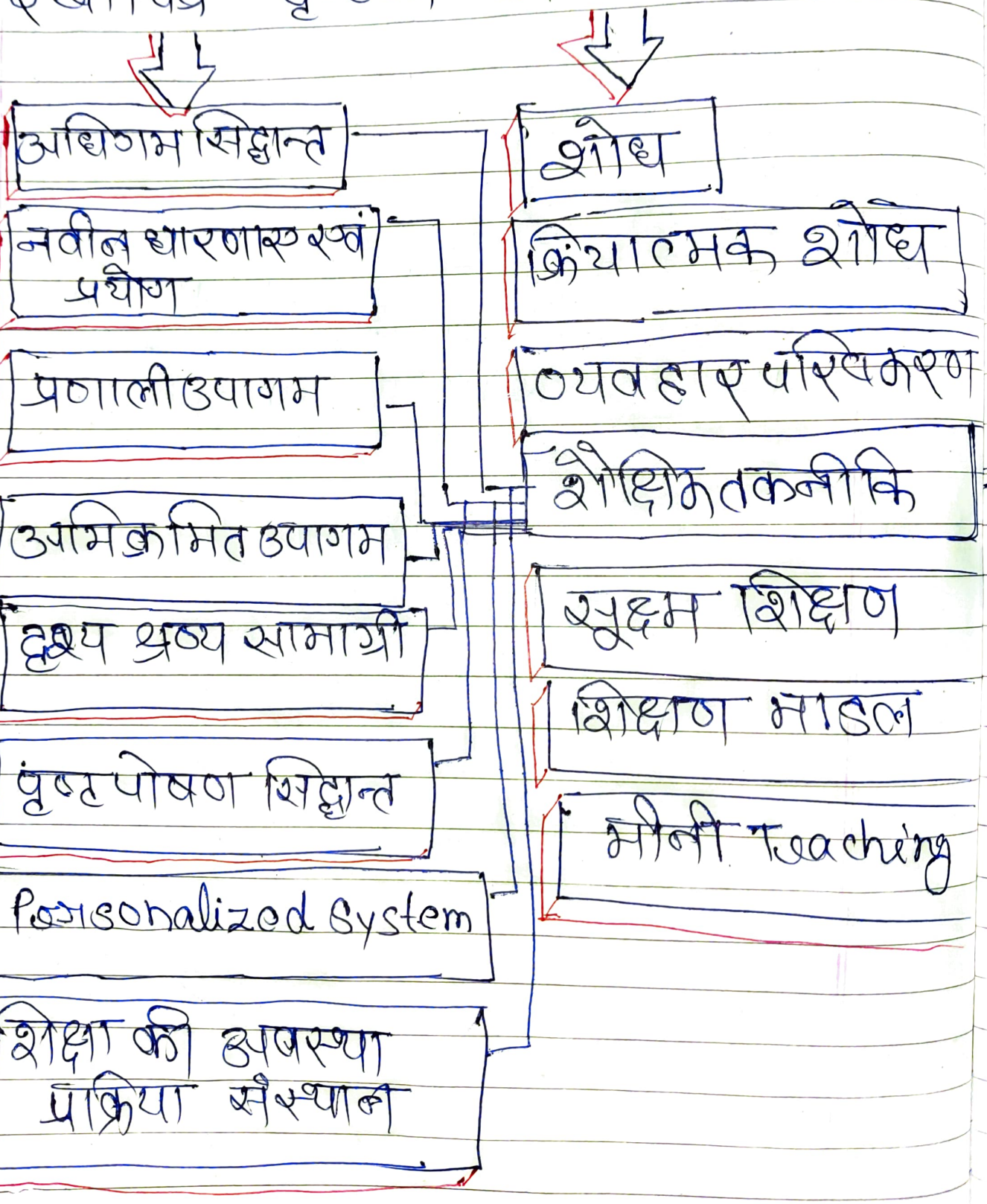

निम्नांकित रेखा चित्र स्पष्ट है कि शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र में शैक्षिक तकनीकि का समावेश है।

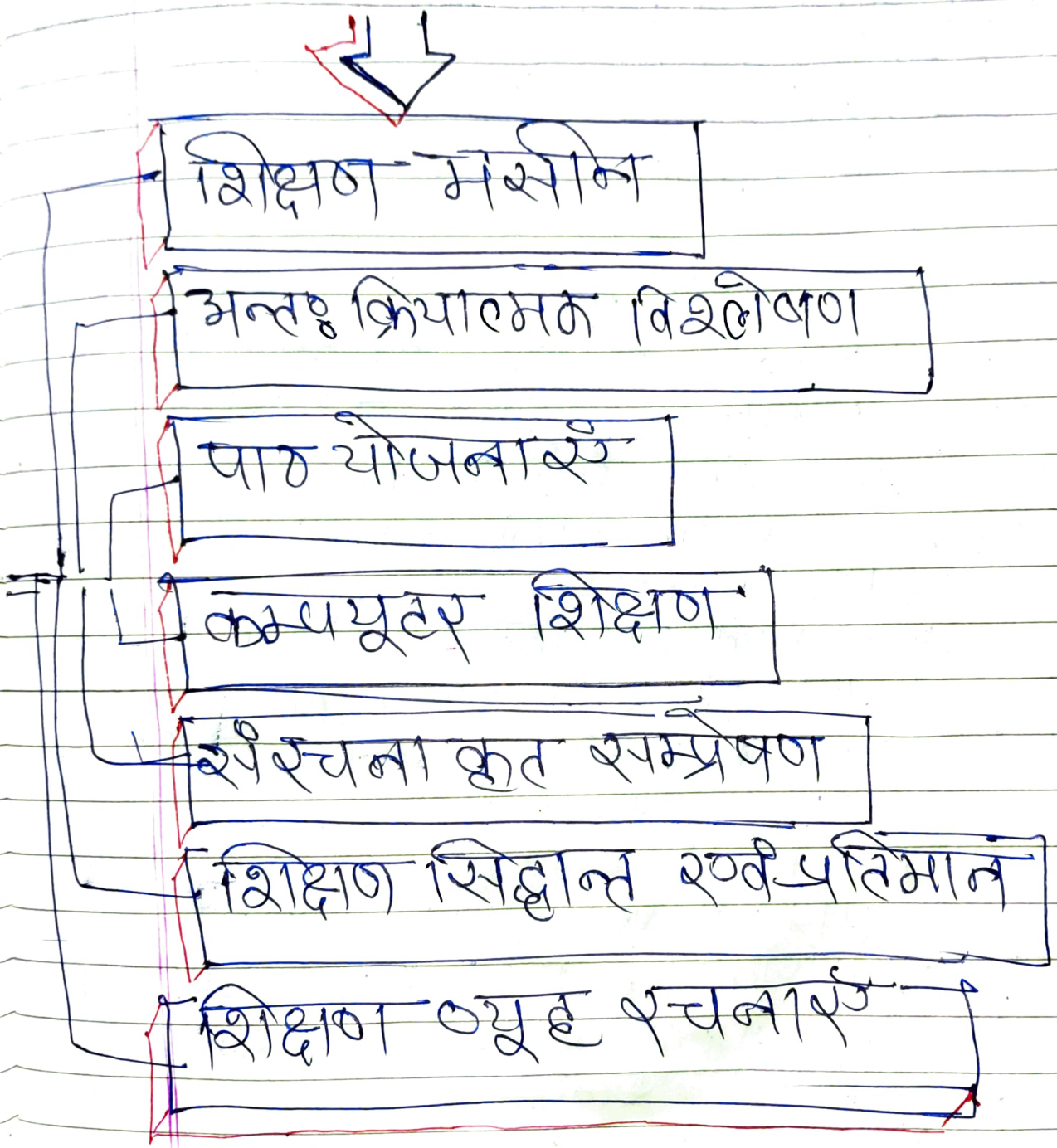

संदर्भ ग्रन्थ- मिश्रा आर०एम० (2008) शैक्षिक तकनीकि के तत्व एवं प्रबन्धन आलोक प्रकाशन लखनऊ।

Page No.
Date: / /

शैक्षिक तकनीकि का अर्थ →

आज का युग वैज्ञानिक युग है। विज्ञान ने मानव जीवन के प्रत्येक पहलू को प्रभावित किया है। जिसमे शिक्षा भी मुख्य क्षेत्र है। शिक्षण प्रक्रिया शिक्षण मशीनो, कम्प्यूटर, रेडियो, टेलीविजन भाषा, प्रयोगशाला आदि के साथ विभिन्न विधियो प्रविधियों एवं व्यूह रचनाओं का उपयोग किया जाता है। शिक्षक अपने कार्य को सरल एवं एवं प्रभावी रूप से प्रस्तुत करने के लिए विभिन्न प्रकार की शैक्षिक एवं वैज्ञानिक का प्रयोग करते है। इन्ही तकनीको को हम शैक्षिक प्रौद्योगिकी कहते है।

आधुनिक काल मे शिक्षा शिक्षण अधिगम की प्राचीन अवधारणाएं बदल चुकी है। NCF 2005 के अनुसार बालक को शिक्षा शिक्षण एवं अधिगम के केन्द्र में स्थापित कर दिया है। आवश्यक है कि शिक्षण प्रक्रिया को सरलतम रूप मे ही नियोजित किया जाय जिसमे बालक स्वयं के ज्ञान का सृजन करके सीखे इसे वर्तमान समय मे रचनावाद कहा गया है। ज्ञान के आदान-प्रदान की प्रक्रिया मे समय के साथ साथ हुए विकास के शिक्षण अधिगम साधनो मे हुए परिवर्तनो को निम्न आरेख से समझ सकते है।

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया	शिक्षण अधिगम साधन
गुरु द्वारा शिष्य को ज्ञान प्रदान करना	मौखिक रूप से
ज्ञान को लिखकर संचित किया जाने लगा तथा ज्ञान का प्रसार किया जाने लगा अर्थात ज्ञान लिखित रूप में दिया जाने लगा	कलम, पत्तियाँ, भोजन पत्र, ताड़पत्र
छापने के आविष्कार तथा शिक्षण अधिगम सामग्री का विकास हुआ जिससे एक से अधिक संख्या में व्यक्तियों को ज्ञान देना सम्भव हुआ	पुस्तके स्याही बोर्ड चाक
इलेक्ट्रानिक्स का शिक्षण में लिखित व मौखिक रूप में प्रयोग हुआ, प्रिंट के रूप में जिससे एक से अधिक संख्या में ज्ञान का प्रसार हुआ।	रेडियो, टीवी कम्प्यूटर, शिक्षण सहायक सामग्री सीडी आदि का उपयोग

प्रथम अर्थ

शैक्षिक तकनीकि एक ऐसी प्रविधि के विज्ञान है जिसके द्वारा शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सकता है। यह उद्देश्यों को व्यवहारिक रूप मे परिभाषित करने मे सहायता करता है।

यह एक ऐसा विज्ञान है जिसके आधार पर शिक्षा के विशिष्ट उद्देश्यों की अधिकतम प्राप्ति के लिए भिन्न व्यूह रचनाओं का निर्धारण तथा विकास किया जा सकता है।

(1) प्रथम पद मे शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के कार्यात्मक जिससे अदा प्रदा तक विभिन्न घटको की पहचान की जा सके

(2) दूसरे पद में विभिन्न के प्रबन्ध कौशल के प्रभाव तथा क्षेत्र मे उनके कार्यो को निर्धारित किया जाता है।

(3) तीसरे पद मे विभिन्न घटको के प्रबन्ध कौशल के प्रभाव तथा क्षेत्र में उनके कार्यो को निर्धारित किया जाता है।

(4) अन्तिम पद में सम्पूर्ण शोध निष्कर्षो को दिशा निर्देशो के अनुरूप प्रयोग कर्ताओं के लिए तैयार किया जाता है।

द्वितीय अर्थ

शैक्षिक तकनीकि का दूसरा अर्थ शिक्षण की क्रियाओं का यन्त्रीकरण करना, शिक्षा की प्रक्रिया में मशीनो का प्रयोग बहुत तेजी से बढ़ रहा है।

मानवी ज्ञान का प्रथम पक्ष, ज्ञान को संचित करना है। छापने की मशीनो से पूर्व अधिकांश ज्ञान कंठस्थ ही किया जा रहा है। यह ज्ञान गुरु शिष्य को प्रदान करता था, परन्तु मशीनो के प्रयोग से ज्ञान को पुस्तक के रूप में पुस्तकालयों में संचित किया जाने लगा, इतना ही नही टेपरिकार्डर फिल्म आदि के प्रयोग से शिक्षक को समस्त रूप में भाषा शैली पाठ्य शैली तथा उनके मानवी ज्ञान का हस्तानान्तरण एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक करना एक शिक्षक सीमित छात्रों को प्रभावित कर सकता है। परन्तु रेडियो दूरदर्शन के प्रयोग से असंख्य छात्रों को अपना ज्ञान प्रदान कर सकता है।

मानवी ज्ञान का द्वितीय पक्ष ज्ञान में वृद्धि करना